जनवरी अंक में प्रकाशित लेख "इन्सटलेशन" में हमारी भावसिंह के आर्टवर्क पर बातचीत हुई थी। 'पर्सनल टच' नामक उस आर्टवर्क को केवल छूकर महसूस किया जा सकता है। वह कुछ इस तरह बनाया गया है कि हम उसे आँखों से नहीं देख सकते। आज मैं तुम्हें जूडिथ स्कॉट के आर्टवर्क से परिचित कराना चाहती हूँ। दिलचस्प बात यह है कि जूडिथ स्कॉट के आर्टवर्क हम आँखों से देख तो सकते हैं, पर फिर भी ये जान-बूझकर कुछ चीज़ें हमारी आँखों से छुपा देती हैं।

कला के आयाम

छिपाकर जो बहुत दिखा जाती है

शेफाली जैन

तस्वीर 1.

ये कुछ फोटो हैं जूडिथ के आर्टवर्क के। ये आखिर हैं क्या चीज़ें? दरअसल स्कॉट हमें इन चीज़ों को पहचानने से आगे की ओर धकेलना चाहती हैं। कुछ वस्तुओं को यहाँ स्कॉट ने रंगीन रस्सियों में कसकर लपेट दिया है। ये रस्सियाँ इतनी बार लपेटी गई हैं कि इनके अन्दर की वस्तुएँ अब पहचान में नहीं आतीं। उनके आकार, उनकी सीमाएँ, उनका टेक्सचर, उनके रंग, यहाँ तक कि उनका वज़न भी इन रस्सियों ने बदल दिया है। यही तो है असमंजस की बात। हम इन चीज़ों को देख तो रहे हैं लेकिन ये बिलकुल बदल चुकी हैं। हम नहीं जानते कि पहले इनका आकार क्या रहा होगा। स्कॉट के सारे आर्टवर्क कुछ ऐसे ही हैं। वे रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से कुछ वस्तुएँ चुनतीं हैं और फिर बड़ी शिद्दत और आराम से उन्हें रंगीन रस्सियों और चिन्दियों में लपेटना शुरू करती हैं। अक्सर वे तब तक नहीं रुकतीं जब तक वह वस्तु पूरी तरह रस्सियों और चिन्दियों में गायब ना हो जाए – तस्वीर 2 देखो। पर कभी-कभार वे अन्दर दबी चीज़ों के कुछ छोटे-छोटे अंशों को खुला छोड़ देती हैं। जैसा कि तुम तस्वीर 1 में देख सकते हो।

जब चीज़ें पूरी तरह से ढँकी होती हैं तो वे एक नया रूप लेकर सामने आती हैं। उनकी पुरानी पहचान की कोई निशानी नज़र नहीं आती। यह नया रूप अक्सर बेनाम और बेपहचान होता है। इसे समझना या फिर शब्दों में व्यक्त करना नामुमकिन-सा महसूस होता है। हम कुछ उपमाओं से इसके बारे में बात कर सकते हैं, जैसे कि तस्वीर 2 में पेड़ के ठूँठ-सा कुछ दिखता है। पर ज़ाहिर है कि इतना रंग-बिरंगा ठूँठ तो हमने पहले कभी देखा नहीं। अगर स्कॉट अन्दर छुपी वस्तु का कोई हिस्सा खुला भी छोड़ देती हैं तब भी वह वस्तु अब पहले जैसी नहीं रहती। जैसे तस्वीर 1 में हमें कुर्सी तो नज़र आ रही है, पर न तो अब वह कुर्सी जैसी दिखती है और न ही उसे कुर्सी जैसे इस्तेमाल किया जा सकता है। अक्सर स्कॉट दो, तीन या फिर उससे भी ज़्यादा चीज़ें साथ में बाँधकर रस्सियों से ढँक देती हैं। जैसा कि शायद उन्होंने तस्वीर 3 में भी किया है।

चलो सोचते हैं कि क्या हमारे आसपास भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो साफ दिखने, जानी-पहचानी होने के बावजूद भी अनजान या अलग-सी हो जाती हैं। जैसे कि पीपल का पेड़। जब पतझड़ का मौसम हमारे शहर या कस्बे को लपेट लेता है तब पत्ते झड़ जाने के कारण पीपल का पेड़ एकदम अनजान-सा हो जाता है। एक बार मैंने जब अकस्मात अपनी परछाई को गौर-से निहारा तो मैं घबरा ही गई थी। मुझे लगा वह कोई और ही थी जिसकी परछाई मैंने देखी!

जूडिथ 'डाउन सिंड्रोम' के साथ पैदा हुई थीं। इस अवस्था में हमारी दिमागी गतिविधियाँ अलग ढंग और रफ्तार से चलती हैं। इसे आज भी बीमारी या कमज़ोरी माना जाता है। पर सच पूछें तो हम सबके दिमाग अपनी-अपनी क्षमताओं और रफ्तार के सहारे काम करते हैं। हम में से कोई भी समान दिमागी क्षमताओं के साथ नहीं जन्मा है। इसे कहते हैं 'तांत्रिक विविधता' (neurodiversity)। खैर, चूँकि ज़्यादातर लोग और

तस्वीर 2

डॉक्टर भी इस विविधता के बारे में हमें बताते नहीं हैं, इसलिए हम आज भी इन अवस्थाओं को बीमारी समझते और ठहराते हैं।

जूडिथ के माँ-बाप और डॉक्टर भी उसे बचपन में सही तरह से पहचान न पाए। उन्हें लगा कि वह दूसरे बच्चों जैसी नहीं है। इसलिए बीमार है। बचपन में ही बहुत तेज़ बुखार आने के कारण जूडिथ की सुनने की शक्ति भी चली गई। इसके कारण भी वे अन्य बच्चों की तरह चीज़ें जल्द नहीं समझ पाती थीं। एक डॉक्टर के मशवरे पर उन्हें छुटपन में ही मानसिक चिकित्सालय भेज दिया गया। जूडिथ 35 सालों तक अलग-अलग मानसिक चिकित्सालयों में रहीं। आखिरकार 1987 में उनकी जुड़वाँ बहन जॉयस स्कॉट उन्हें घर वापस लाईं। कुछ समय बाद जूडिथ की बहन ने ओकलैंड, कैलिफोर्निया स्थित 'क्रिएटिव ग्रोथ आर्ट सेंटर' में उनका दाखिला करवा दिया, ताकि उनकी रोकी गई शिक्षा वापस शुरू हो सके।

इसी आर्ट सेंटर में जूडिथ के इन आर्टवर्क्स की शुरुआत हुई। उनके ये आर्टवर्क्स जिस तरह कई परतों में लिपटे हुए हैं उसी तरह हमारे आसपास की चीज़ें और लोग भी कई प्रकार की परतों में लिपटे हो सकते हैं। जूडिथ के आर्टवर्क हमें यह बात दोहरा-दोहराकर बताते हैं। और शायद वे हमें यह भी बताते हैं कि कभी-कभी समझना केवल परतें खोलना नहीं, बल्कि परतें स्वीकार करना होता है। या फिर उन्हें समयानुसार खुलने या खिलने का समय देना भी हो सकता है।

जूडिथ के आर्टवर्क देखने और परखने के नए मायने तैयार करते हैं। हर चीज़ जो साफ दिखाई देती है, ज़रूरी नहीं कि वह हमें पूरी समझ आ गई है। और जो चीज़ हमारी आँखों से छुपाई गई है उसका छुपाना भी हमारी समझ बढ़ा सकता है।

तस्वीर 3